सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम के अपवाद
(EXCEPTIONS OF THE LAW OF DIMINISHING MARGINAL UTILITY)

सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम के मुख्य अपवाद निम्नलिखित हैं :

1. **शराब के साथ यह नियम लागू नहीं होता है** (This law is not applicable to wine)—इस नियम के आलोचकों का कथन है कि शराब के साथ उपयोगिता ह्रास नियम लागू नहीं होता है। इनके अनुसार, शराब के प्रत्येक अगले पैग से अधिक उपयोगिता प्राप्त होती है। किन्तु यह आलोचना सही प्रतीत नहीं होती, क्योंकि इसमें नियम की मान्यता का उल्लंघन किया गया है। मान्यतानुसार उपभोक्ता की मानसिक अवस्था में परिवर्तन नहीं होना चाहिये, जबकि शराब के उपभोग से उपभोक्ता की मानसिक स्थिति में परिवर्तन हो जाता है।

2. **कंजूस के साथ यह नियम लागू नहीं होता** (This law is not applicable to a miser)—बहुधा ऐसा कहा जाता है कि एक कंजूस व्यक्ति के पास जैसे-जैसे धन बढ़ता जाता है, वह और अधिक धन जमा करने के लिये लालायित होता जाता है, अतः एक कंजूस व्यक्ति के साथ मुद्रा संचय की इच्छा के सम्बन्ध में उपयोगिता ह्रास नियम लागू नहीं होता है।

इस सम्बन्ध में दूसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि कोई भी कंजूस व्यक्ति एकत्रित धन का प्रयोग एक ही वस्तु के उपभोग पर नहीं करता है। वस्तुतः यहाँ भी नियम की मान्यता का उल्लंघन होता है।

3. **वस्तु की इकाइयाँ छोटी होने पर यह नियम लागू नहीं होता है** (This law is not applicable if the units of commodity are too small)—यदि उपभोग की जाने वाली वस्तु की इकाई बहुत छोटी है, तो सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम लागू नहीं होगा। उदाहरणतः, एक प्यासे व्यक्ति को चम्मच से पानी पीने दिया जाय तो कुछ समय तक प्रत्येक अगले चम्मच पानी से उसे अधिक उपयोगिता प्राप्त होगी अर्थात् उपयोगिता ह्रास नियम लागू नहीं होगा। हालाँकि यह अपवाद भी गलत है क्योंकि नियम की मान्यतानुसार उपभोग की इकाई उपयुक्त होनी चाहिये। सामान्य तौर पर पानी पीने की इकाई गिलास होता है, न कि चम्मच।

4. **दुर्लभ वस्तुओं के संग्रह करने के सम्बन्ध में यह नियम लागू नहीं होता है** (This law is not applicable in collection of rare goods)—यह अपवाद भी गलत है क्योंकि दुर्लभ वस्तुओं का तात्पर्य अनेक दुर्लभ वस्तुओं से है, जबकि मान्यतानुसार एक ही दुर्लभ वस्तु होनी चाहिये। अर्थात् यहाँ भी नियम की मान्यता का उल्लंघन किया गया है। उदाहरण के लिये, यदि कोई व्यक्ति एक ही प्रकार के किसी विशेष टिकट का संग्रह करता है तो निश्चित रूप में वहाँ सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम लागू हो जायेगा। इसे एक दूसरे उदाहरण से भी स्पष्ट किया जा सकता है। मान लिया जाय कि कोई व्यक्ति कैलेण्डर (तस्वीर) के संग्रह में काफी रुचि रखता

Scanned with CamScanner

है और वह 'श्रीदेवी' का कैलेण्डर जोकि एक ही रूप में हो संग्रह करता है, तो निश्चय ही इसके संग्रह के सम्बन्ध में सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम लागू होगा।

5. **अच्छी कविता या गाने के सम्बन्ध में यह नियम लागू नहीं होता है** (This law is not applicable to good poetry or song)—यह अपवाद भी सही प्रतीत नहीं होता है, क्योंकि कितनी भी अच्छी कविता या गाना क्यों न हो, दो-चार बार लगातार सुनने से सुनने की रुचि घटने लगती है। हाँ, हो सकता है दूसरी बार में यह नियम लागू नहीं हो किन्तु अधिक बार सुनने के बाद यह नियम अवश्य लागू होगा।

6. **शृंगार-प्रिय औरतों के साथ यह नियम लागू नहीं होता है** (This law is not applicable to luxurious ladies)—यह अपवाद भी गलत प्रतीत होता है क्योंकि यदि कोई औरत एक ही प्रकार की बिन्दियों का प्रयोग करती है, तो निश्चय ही यह नियम लागू होगा। हाँ अलग-अलग बिन्दियों का प्रयोग करने पर यह अपवाद सही साबित होगा। किन्तु ऐसा करने से नियम की मान्यता का उल्लंघन होता है।

7. **उपभोक्ताओं की संख्या में वृद्धि होने पर यह नियम लागू नहीं होता है** (This law is not applicable if the numbers of consumers are increased)—वास्तव में, यह अपवाद भी सही प्रतीत नहीं होता है क्योंकि इस नियम की सत्यता को एक उपभोक्ता के सन्दर्भ में ही परखा जा सकता है। उदाहरण के लिये, यदि किसी व्यक्ति को 10 टेलीफोन की सुविधा दे दी जाय तो टेलीफोन की उपयोगिता घटेगी ही। हाँ, एक ओर टेलीफोन की संख्या बढ़ायी जाय और दूसरी ओर उपभोक्ताओं की भी, तो यह नियम लागू नहीं होगा। किन्तु ऐसा करना मान्यताओं के विरुद्ध होगा।

निष्कर्ष—उपरोक्त अपवादों का अध्ययन करने के बाद इस निष्कर्ष पर आते हैं कि ये सारे अपवाद गलत हैं, अर्थात् इस नियम के अपवाद हैं ही नहीं। यदि नियम की मान्यताओं को ध्यान में रखते हुए देखा जाय तो सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम एक सार्वभौम नियम साबित होगा। संक्षेप में, यह अपवाद वास्तविक होकर बनावटी है।

सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम का महत्व
(IMPORTANCE OF THE LAW OF DIMINISHING MARGINAL UTILITY)

जैसा कि इस नियम के अपवादों के अध्ययन के क्रम में देखा गया, यह एक सार्वभौम (Universal) नियम है। अत: व्यावहारिक जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में इसका महत्वपूर्ण स्थान है। इसके मुख्य महत्व निम्नलिखित हैं :

1. **उत्पादन के क्षेत्र में महत्व** (Importance in the field of production)—उत्पादन के क्षेत्र के लिये यह नियम अत्यन्त ही महत्वपूर्ण साबित होता है। वस्तुओं के उत्पादन में इस नियम को ध्यान में रखा जाना आवश्यक होता है। जब एक ही वस्तु का उत्पादन बड़ी मात्रा में होने लगता है, तो इससे उत्पादित वस्तु की उपायोगिता में ह्रास होने लगता है, फलत: वस्तु की माँग घटने लगती है। ऐसी स्थिति में उत्पादक उस वस्तु का उत्पादन स्थगित कर किसी दूसरी वस्तु का उत्पादन कर अधिक धन अर्जित करने में सफल होता है। इस प्रकार, वस्तुओं के उत्पादन के सम्बन्ध में यह नियम आधारशिला के रूप में कार्य करता है।

2. **सम-सीमान्त उपयोगिता नियम का आधार** (Base of the law of equi-marginal utility)—प्रत्येक व्यक्ति अपनी सीमित आय (साधन) से अधिकतम सन्तुष्टि प्राप्त करना चाहता है। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिये वह अपनी सीमित आय का प्रयोग उस वस्तु पर करना चाहता है जिससे उसे अधिकाधिक उपयोगिता प्राप्त होती हो। किन्तु यदि वह एक ही वस्तु की अनेक इकाइयों का प्रयोग करता है तो उपयोगिता ह्रास नियम लागू होने के कारण उसे कम उपयोगिता प्राप्त होती है। इस कारण से वह कम उपयोगिता वाली वस्तु से अपना उपभोग

Scanned with CamScanner

बदलकर अधिक उपयोगिता वाली वस्तु का उपभोग प्रारम्भ कर देता है। इस क्रम का प्रयोग वह तब तक करता जायेगा जब तक विभिन्न वस्तुओं से प्राप्त होने वाली सीमान्त उपयोगिता आपस में बराबर नहीं हो जाये। इस प्रकार, सम-सीमान्त उपयोगिता नियम सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम पर आधारित है।

3. **उपभोक्ता की बचत सिद्धान्त का आधार** (Base of the theory of consumer surplus)—किसी वस्तु के लिये जो कीमत चुकाने के लिये तैयार हैं और वास्तव में जो हम चुकाते हैं, दोनों का अन्तर उपभोक्ता की बचत कहलाती है। जैसे-जैसे हम किसी वस्तु की उत्तरोत्तर इकाइयों का प्रयोग करते जाते हैं, सीमान्त उपयोगिता घटती हुई दर से प्राप्त होती है। उस वस्तु की खरीद हम उस बिन्दु पर बन्द कर देते हैं जहाँ सीमान्त उपयोगिता एवं चुकायी गयी कीमत आपस में बराबर होती हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि जिन इकाइयों पर सीमान्त उपयोगिता से अधिक उपयोगिता प्राप्त हुई, हमारे लिये एक प्रकार की बचत है। इस प्रकार उपभोक्ता की बचत का सिद्धान्त भी सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम पर आधारित है।

4. **माँग के नियम का आधार** (Base of the law of demand)—माँग का नियम भी सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम पर आधारित है। यदि उपभोक्ता किसी वस्तु की अधिक इकाइयों का प्रयोग करता है तो उसे कम उपयोगिता प्राप्त होगी। कोई भी उपभोक्ता किसी वस्तु की कीमत उस वस्तु से प्राप्त होने वाली उपयोगिता के ही आधार पर चुकाना चाहता है। दूसरे शब्दों में, कम कीमत होने पर ही वह वस्तु की अधिक इकाइयों का क्रय करना चाहेगा। इसके विपरीत, वह किसी वस्तु की जितनी ही कम इकाइयों का प्रयोग करेगा, उसे अधिक उपयोगिता प्राप्त होगी। अधिक उपयोगिता का अर्थ हुआ अधिक कीमत अर्थात् अधिक कीमत पर वह वस्तु की कम इकाइयों का उपभोग करेगा। संक्षेप में :

वस्तु की अधिक मात्रा → कम उपयोगिता → कम मूल्य
वस्तु की कम मात्रा → अधिक उपयोगिता → अधिक मूल्य

अतः माँग का नियम भी सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम पर आधारित है।

5. **प्रगतिशील कर प्रणाली का आधार** (Base of the progressive tax system)—जब कम आय वालों से कम कर (Tax) तथा अधिक आय वालों से अधिक कर (Tax) वसूला जाता है, तो कर की इस प्रणाली को प्रगतिशील कर प्रणाली कहते हैं। जिनकी आय कम होती है उनके लिये मुद्रा की सीमान्त उपयोगिता अधिक होती है। इसके विपरीत, जिनकी आय अधिक होती है, उनके लिये मुद्रा की सीमान्त उपयोगिता कम होती है। इस प्रकार, प्रगतिशील कर प्रणाली सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम पर अवलम्बित/आधारित है।

6. **मूल्य-निर्धारण में सहायक** (Helpful in Price-determination)—यह नियम वस्तुओं के मूल्य-निर्धारण में काफी सहायक होता है। चूँकि कोई भी व्यक्ति किसी भी वस्तु का अधिकतम मूल्य उससे प्राप्त होने वाली उपयोगिता के बराबर ही देने के लिये तैयार होता है। अतः जिस वस्तु से उपभोक्ता को प्राप्त होने वाली सीमान्त उपयोगिता अधिक होगी उसका अधिक मूल्य तथा जिससे कम होगी, उसका कम मूल्य निर्धारित किया जायेगा।

सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम की आलोचनाएँ
(CRITICISMS OF THE LAW OF DIMINISHING MARGINAL UTILITY)

वस्तुतः सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम एक सार्वभौम नियम है जिसके कोई वास्तविक अपवाद नहीं हैं, फिर भी उपयोगिता की माप की जटिलता के आधार पर इस नियम की आलोचना की जाती है। अर्थशास्त्रियों का विचार है कि उपयोगिता की सही माप नहीं की जा सकती। जो लोग उपयोगिता को मुद्रा-रूपी मापदण्ड (Measuring Rod of Money) से मापने की बात

Scanned with CamScanner

करते हैं, उनके उत्तर में यह कहा जा सकता है कि मुद्रा भी उपयोगिता की माप का सही मापदण्ड नहीं है क्योंकि मुद्रा की उपयोगिता सभी व्यक्तियों, सभी समयों तथा परिस्थितियों में एक समान नहीं रहती।

पुनः यह कहा जाता है कि यह नियम किसी वस्तु की उपयोगिता का एकाकी अध्ययन है क्योंकि एक वस्तु की उपयोगिता दूसरी वस्तु द्वारा भी प्रभावित होती है। उदाहरण के लिए रोटी की उपयोगिता मक्खन एवं सब्जी की मात्रा पर भी निर्भर करती है।

उपरोक्त बातों से स्पष्ट होता है कि उपरोक्त आलोचनाएँ इस नियम से सम्बन्धित उपयोगिता की माप की कठिनाइयों से सम्बन्धित हैं। इन आलोचनाओं के आधार पर इस नियम की महत्ता से इनकार नहीं किया जा सकता। निःसन्देह यह नियम सर्वमान्य एवं सार्वभौम है और इसके कोई वास्तविक अपवाद नहीं हैं।

Scanned with CamScanner